*वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटैक्स) और आभाषी मुद्रा**

आर. गांधी

मुझे बहुत खुशी है कि आईबीए, फिक्की और नैस्कॉम इस सम्मेलन का आयोजन नवोन्मेष और साझेदारी के प्लेटफॉर्म के रूप में कर रहे हैं जो विश्वसनीय फिनटैक द्वारा समर्थित (पीआईसीयूपी) है।

प्रौद्योगिकी और बैंकिंग का पुराना करीबी संबंध रहा है। इस संबंध का दोनों को अत्यधिकधिक लाभ मिला है। प्रौद्योगिकीय गतिविधियां बैंकों और वित्तीय संस्थानों तथा उनके ग्राहकों के परस्पर प्रभावित करने के तरीकों में परिवर्तन का कारक रही हैं। इन गतिविधियों ने नई संस्थाओं, जो आवश्यक नहीं है कि बैंकर संस्थाएं ही हों, के लिए परंपरागत कारोबारी मॉडलों को बाधित करने और नए बाजारों में हस्तक्षेप करने के अवसर उत्पन्न कर दिया है। परंपरागत सेवाओं को भिन्न तरीके से अधिक दक्षतापूर्वक उपलब्ध कराने वाली फिनटैक कंपनियों के उद्भव में बहुत से प्रौद्योगिकीय उत्पादों और सेवाओं ने योगदान किया है।

मुद्रा की संकल्पना को समझे जाने के समय से उधार देने और उधार लेने की संकल्पना अस्तित्व में है। हालांकि, उधार देने और उधार लेने के व्यवस्थित तरीके लगभग 700 वर्ष पहले आधुनिक बैंकों के प्रतिमानों की स्थापना होने के साथ विकसित हुए। बैंकों ने एक अन्य सेवा, अर्थात विप्रेषण सेवा की शुरुआत की। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र के जबरदस्त रुझानों ने बैंकिंग और बैंकों को पुन: परिभाषित कर दिया है। वास्तव में यह पुन: परिभाषित करना (रिडेफिनिशन) नहीं बल्कि नई परिभाषा तय करना (डिडेफिनिशन) है। बैंकिंग से तात्पर्य अब सिर्फ उस कार्य से नहीं रह गया जो बैंक कर, बल्कि गैर-बैंक कार्य भी अब इसके अंतर्गत आने लगे हैं। बैंक अब वे संस्थाएं नहीं रहीं जो सिर्फ बैंकिंग करते हों, अब तो गैर-बैंक संस्थाएं भी बैंकिंग करती हैं।

बैंकिंग को खंडित करना आज का नया प्रतिमान है, और इनमें से प्रत्येक खंड को अपनाने के लिए कुछ विशेषज्ञ संस्थाएं हैं, जो सिर्फ उस खंड से संबंधित कार्य करती हैं। भुगतान सेवा प्रदाता, पी2पी सेवाएं, पी2बी सेवाएं, एसएमई वित्तपोषण, खुदरा उपभोक्ता वित्तपोषण, मध्यस्थता की समाप्ति, क्राउड फंडिंग, ओपन ऐंडेड म्यूचुअल फंड, मनी मार्केट म्यूचुअल फंड, राशि जमा करने के वैकल्पिक साधन, ट्रेड फाइनेंसिंग, इनवाइस फाइनेंसिंग, बिल डिसकाउंटर, बिल कलेक्टर (संग्राहक), क्रेडिट रेफरल, एकाउंट एग्रेगेटर, इन्वेस्टमेंट बैंकर, एमएफआई, सहकारी संस्थाएं, एचएफसी एवं क्रेडिट रेटिंग ऐजेंसियां उन कुछ संस्थाओं में से हैं जिन्होंने बैंकिंग को खंड-खंड करके उसे कमजोर कर दिया है। क्या बैंकिंग का कोई तत्व है जो सिर्फ बैंकों के लिए बचा हो ?

बैंकों से बैंकिंग को खंडित करने से इन गैर-बैंक संस्थाओं के कारोबार में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। अपनी विशेषता और प्रदान की जाने वाली संकेंद्रित सेवाओं के साथ वे उस चुनिंदा सेवा को बेहतर दक्षता, गति और ग्राहकों के लिए वहनीय बहुत कम लागत पर उपलब्ध कराने की स्थिति में होते हैं। जब ये विशेषीकृत संस्थाएं अपने कारोबारी मॉडल के रूप में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का नवोन्मेषी प्रयोग करती हैं, तब उन्हें फिनटेक कहा जाने लगता है। फिनटेक कंपनियों का एक अन्य प्रकार भी है। ये कंपनियां वह होती हैं जो वित्तीय क्षेत्र की कंपनियों के प्रयोग हेतु नवोन्मेषी प्रणालियां, उत्पाद और सुविधाएं विकसित करती हैं। ऐसी फिनटेक कंपनियां वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराने के कारेबार में शामिल नहीं होतीं। ये कंपनियां प्राथमिक रूप से फिनटेक कंपनियों की अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) संबंधी सहायक कंपनियां होती हैं।

परिभाषा के रूप में, प्रौद्योगिकीय स्टार्टअप के दौर में फिनटेक सामान्यत: उस खंड को कहा जाता है जो मोबाइल भुगतानों, मुद्रा अंतरणों, ऋणों, निधि-उगाही एवं यहां तक कि आस्ति प्रबंध जैसे क्षेत्रों को भी बाधित करता है।

पिछले तीन वर्षों के दौरान यह शब्द प्रचलित शब्द बन गया है। इसके कारण निधि की उगाही, प्रयोग, उधार देने, उधार लेने और विप्रेषिण के तरीके बदल रहे हैं। इससे सिर्फ उद्यमी और कारोबार ही नहीं प्रभावित हो रहे हैं, बल्कि साधारण बैंक और वित्तीय उपभोक्ता भी प्रभावित हो रहे हैं। इतना ही नहीं, दुनिया भर में विनियामक सामूहिक रूप से गहरी रुचि के साथ गतिविधियों की निगरानी कर रहे हैं। इन गतिविधियों की जांच करने के लिए वित्तीय स्थिरता बोर्ड, बैंकिंग पर्यवेक्षण से संबंधित बासेल समिति एवं अन्य मानक तय करने वाली संस्थाओं ने विशेष दलों, कार्यदलों का गठन किया है।

* 1 मार्च 2017 को होटल ट्राइडेंट, नरीमन पॉइंट, मुंबई में फिक्की, आईबीए एवं नैस्कॉम द्वारा आयोजित "फिनटैक सम्मेलन 2017" में श्री आर. गांधी, उप गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक का उद्घाटन भाषण ।

फिनटैक कंपनियों में यह रुचि क्यों बढ़ी है ? मेरे विचार से ऐसा होने का श्रेय फिनटेक कंपनियों के दो नवोन्मेषों, नामत: मार्केट प्लेस फाइनेंसिंग तथा ब्लॉकचेन, को दिया जा सकता है।

मार्केट प्लेस फाइनेंसिंग को 'क्राउड फंडिंग' के रूप में भी जाना जाता है और सामान्यत: इसका तात्पर्य किसी परियोजना या वेंचर का बड़ी संख्या में लोगों से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में जुटाई गई राशियों के माध्यम से निधीयन से होता है, जो विशेष रूप से किसी पोर्टल के मध्यस्थ के रूप में कार्य के अधीन होता है। क्राउड फंडिंग के बहुत से स्वरूप होते हैं : कुछ परोपकारी स्वरूप की भेंट होती हैं जिनसे कोई वित्तीय प्रतिलाभ प्राप्त नहीं होता है। कुछ अन्य प्रकार भी होते हैं जैसे, इक्विटी क्राउड फंडिंग जो वित्तीय बाजारों के दायरे के अंतर्गत आता है। लोगों से सीधे (पी2पी) उधार लेना क्राउड फंडिंग का एक स्वरूप है जिसकी वापसी ब्याज सहित की जाती है।

इस नवोन्मेषी मार्केट प्लेस फाइनेंसिंग के कारण दुनिय-भर के बहुत से लोग बैंकिंग और वित्तीय मध्यस्थता की समाप्ति का अंदेसा जता रहे हैं। कुछ लोग तो परंपरागत बैंकों और वित्तीय संस्थानों के शीघ्र समाप्त किए जाने की वकालत करने लगे हैं। इस बाधाकारी नवोन्मेष ने सचमुच बहुत से विश्लेषकों, विचारों को प्रभावित करने वालों और प्रभावशाली विचारकों का ध्यान आकर्षित किया है। वे बैंक-रहित अर्थव्यवस्था या बैंक-मुक्त अर्थव्यवस्था की बात करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, वे विनियामक के समाप्त हो जाने की कल्पना भी करते हैं।

इसी प्रकार से, ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी भी एक अन्य बाधाकारी नवोन्मेष है। ब्लॉकचेन आर्थिक लेनदेन का डिजिटल लेजर होता है जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता। इसे इस तरह से प्रोग्राम किया जा सकता है कि इसमें न सिर्फ वित्तीय लेनदेन दर्ज हों बल्कि महत्व की लगभग सभी बातें दर्ज हों। ब्लॉकचेन खुले, वर्गीकृत लेजर होते हैं जो दो पार्टियों के बीच लेनदेन को दक्षतापूर्वक इस प्रकार से दर्ज कर सकते हैं कि स्थायी रूप से उनका सत्यापन किया जा सके।

इस प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए जो विशिष्ट नवोन्मेषी उत्पाद परिलक्षित हुए हैं, उन्होंने दुनिया-भर के लोगों के बड़े वर्गों में उत्तेजना भर दी है। मैं बिटकॉइन की अद्भुत घटना की बात कर रहा हूं। बिटकॉइन्स ने जिस तरह से कल्पनाओं को साकार किया है, लोगों में रुचि उत्पन्न किया है और महत्व प्राप्त किया है, उसके कारण कुछ लोग मुद्रा प्रणाली की समाप्ति की भविष्यवाणी करने लगे हैं।

मेरा मानना है कि बैंकों ओर वित्तीय संस्थानों के साथ ही मुद्रा के समाप्त होने संबंधी भविष्यवाणी ने दुनिया-भर के विनियामकों और केंद्रीय बैंकरों के बीच स्वभाविक रूप से न्यूनतम स्तर की उत्सुकता और चिंता उत्पन्न की है।

यह स्वीकृत तथ्य है कि नवोन्मेष अपने साथ अन्य बातों के अलावा दक्षता, उत्पादकता, गुणवत्ता, प्रतिस्पर्धात्मकता और बाजार में हिस्सेदारी लेकर आते हैं। तथापि, आमतौर पर नवोन्मेष आमूलचूल परिवर्तन के रूप में परिणत होने के कारण वे विशेषरूप से बाधाकारी होते हैं। उनको समझने के लिए प्रयासों और समय की आवश्यकता होती है। इनसे जुड़े खतरों में बिना परीक्षण के प्रभाव, दीर्घावधि प्रभावों पर स्पष्टता का अभाव शामिल हैं, और नवोन्मेष के चलते गलतफहमी उत्पन्न होना तथा उसका गलत प्रयोग भी संभव है। दरअसल, कभी-कभी नवोन्मेष बुरे हो सकते हैं और कभी-कभी अच्छे नवोन्मेषों का गलत प्रयोग भी किया जा सकता है।

परिभाषा के अनुसार नवोन्मेष असामान्य तरीके से प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने का जरिया होते हैं। इनमें प्रणालियों के परिचालन के मानक तौर-तरीकों में व्यवधान पैदा करने की अपार क्षमता होती है। हालांकि, इस प्रक्रिया के दौरान हमें लाभ प्राप्त होता है किंतु यह बात भी असामान्य नहीं है कि ये नवोन्मेष समाज के लिए कष्टकारी होते हैं। इसलिए, इस तरह के नवोन्मेषों को अपनाए जाने के पहले हमें इनके गुणावगुणों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करना, जोखिमों से सुविचारित ढंग से बचाव करने की व्यवस्था करने, दायरा विस्तृत करने के पहले प्रायोगिक आधार पर बारीकी से अध्ययन करने, प्राप्त होने वाले फीडबैक के आधार पर उनका उचित समायोजन करना इत्यादि की जरूरत होती है।

मार्केट प्लेस फाइनेंसिंग एवं ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकियों से जुड़े अधोगामी जोखिम क्या हैं ? मार्केट प्लेस फाइनेंसिंग निधि जुटाने वालों एवं निधि उपलब्ध कराने वालों को आपस में जोड़ती है। चलिए मान लेते हैं इसके कारण वित्तीय मध्यस्थ की जरूरत समाप्त हो जाती है और इसलिए उससे संबद्ध लागत भी घट जाती है। तथापि निधि जुटाने वालों और निधि उपलब्ध कराने वालों के बढ़िया कार्यनिष्पादन की गारंटी कौन लेता है ? संविदागत बाध्यताओं का प्रवर्तन कौन करेगा ? जब इनमें से प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे को जानते भी नहीं, एक दूसरे से बहुत अधिक दूरी पर स्थित हों, जो दूरी सीमा के परे भी हो सकती है तब मामला जटिल हो जाता है। इसलिए विशाल राशि जुटाने के लिए मार्केट प्लेस फंडिंग उपयुक्त नहीं हो सकती है। वित्त के संबंध में यह ज्ञात बुद्धिमत्ता की बात

है कि शुरुआती दौर में स्वीकृत होने और सफलता के बाद के समय और दौर में आकर्षित होने वाले लोगों की संख्या में गुणोत्तर वृद्धि होती है, फिर यह श्रृंखला टूट जाती है और विफलता हाथ लगती है। निर्दोष और कमजोर पार्टियों के संरक्षण हेतु आपको संगठित और विनयमित संस्था की आवश्यकता होती है। किसी भी लोकतंत्रात्मक प्रणाली के अंतर्गत इस व्यवस्था को 'प्रौढ़ स्वीकृति' के तर्क के रूप में खारिज नहीं किया जा सकता। बड़े पैमाने पर विफलताएं सामने आने पर 'प्रौढ़ स्वीकृति' के तर्क से काम नहीं चल सकता।

मैं ब्लॉकचेन अथवा डिस्ट्रीब्यूटेड लेजर टेकनोलॉजी और आभासी मुद्रा को बढ़ावा देने की इनकी तथाकथित क्षमताओं के बारे में थोड़ी और चर्चा करना चाहता हूं।

जहां तक मुद्रा की समाप्ति की बात है, यह कोई नया मसला नहीं है। इसकी भविष्यवाणी 1950 के दशक की शुरुआत से की जाती रही है। आप लोगों को आइजेक ऐसिमोव की रोबोट सीरीज़ (1950 के दशक से 80 के दशक तक की) याद होगा, जिसमें ऐसे भविष्य की कल्पना की गई थी जिसमें नकद राशि का अस्तित्व नहीं हो। नकद राशि के स्थान पर लोग "क्रेडिट्स" अर्जित किया करते थे, जिनका इलेक्ट्रॉनिक रूप में कारोबार किया जाता था। जून 1991 में, ओमनी पत्रिका के लेखकों ने दावा किया कि "..... नकद राशि और क्रेडिट शीघ्र ही पुराने पड़ जाएंगे।" 1994 में जोएल कुर्टजमैन ने 'डैथ ऑफ मनी' शीर्षक वाली किताब में कहा कि *"कुछ ही लोगों को एहसास है कि अपने पारंपरिक अर्थ में मुद्रा समाप्त हो गई है। कुछ लोगों ने तो इसके तथ्य के प्रभावों पर विमर्श भी बंद कर दिया है।"*

उस समय मुद्रा की समाप्ति के बारे में बात करने का चलन था। लोग कहते थे कि "2020 तक अधिकांश लोगों अपनी खरीद के लिए स्मार्ट-डिवाइस स्वाइपिंग करने लगेंगे, जिससे नकद राशि या क्रेडिट कार्डों की जरूरत लगभग समाप्त हो जाएगी।"

सवाल यह है कि क्या मुद्रा समाप्त हुई ? क्या यह समाप्त हो रही है ? अथवा क्या यह समाप्त होगी ? इन वर्षों के दौरान, आप देखेंगे कि मुद्रा का चलन वस्तुत: मात्रा की दृष्टि से बढ़ा है। ऐसा सिर्फ विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में नहीं हुआ है, जहां पर बैंकिंग और वित्त की अभी पूर्णत: पहुंच नहीं हुई है; विकसित देशों में भी ऐसा हुआ है, जहां पर बैंकिंग और वित्त अपनी पैठ बना चुके हैं। देशों में अधिकाधिक मुद्राएं छापी जा रही हैं। संभवत: उत्तरी यूरोप के देश इसके अपवाद हैं।

अब क्रिप्टो करेंसी का आगमन हुआ है। लोग कह रहे हैं, इस बार मुद्रा समाप्त हो जाएगी। कुछ अन्य लोगों का कहना है कि यह बहुत करीबी मामला होने वाला है; कम से कम मुद्रा का स्थान आभाषी मुद्रा तो ले ही लेगी।

अनुसंधानकर्ता काफी समय से बेनामी और स्वतंत्र डिजिटल मुद्रा की तलाश में हैं। इंटेल के टिमोथी मे एवं इरिक हग्स के नेतृत्व में 1992 में गुप्त तर्क (क्रिप्टो लॉजिक) के माध्यम से निजता विकसित करने के इन लोगों के प्रयासों को साइबरपंक्स (रहस्यवादी) कहा गया। उन्होंने मुद्रा की वर्तमान प्रणाली को पर संदेह का समर्थन किया और बेनामी तथा स्वतंत्र डिजिटल मुद्रा के बारे में अराजकतावादी फ़लसफा का बढ़-चढ़कर बातें की। 1998 में वेइ दाई ने बी-मनी नामक मुद्रा तैयार करने का प्रयास किया, जिसको आजमाया नहीं जा सका या उसका पता नहीं लगाया जा सका। निक जबो ने बिट-गोल्ड तैयार करने को कोशिश की, जिसका तैयार करना मुश्किल होगा और उसकी कीमत तय करना भी मुश्किल होगा। उन्होंने गुप्त मामलों की गुत्थी को सुलझाने की कोशिश की। सतोशी नाकामोटो ने बिटकॉइन के मामले में इस काम को आगे बढ़ाया।

वाह ! अब आपके पास ऐसी मुद्रा है जिसका सृजन प्राधिकृत लोगों ने नहीं किया है और अधिकाधिक लोगों ने इसे स्वीकार कर लिया है। बिटकॉइन ने महत्व प्राप्त कर लिया है, इनका प्रयोग विभिन्न प्रकार के आर्थिक लेनदेन करने में किया जा रहा है। लोग निवेश के लिए और मूल्य संग्रह के रूप में इनका प्रयोग कर रहे हैं। अस्तु, 'मुद्रा' समाप्त की जा रही है।

ब्लॉकचेन, जो बिटकॉइन जैसे नवोन्मेषों का आधार है, को मुद्रा की समाप्ति की घोषणा कहा जा रहा है। मैं समझता हूं कि इसकी क्षमता को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जा रहा है। हम देख सकते हैं कि आभाषी मुद्रा के इस तरह के उपायों के लिए कोई केंद्रीय बैंक या मौद्रिक प्राधिकारी अस्तित्व में नहीं है। इनमें संभावनायुक्त वित्तीय, परिचालनगत, विधिक, उपभोक्ता संरक्षण एवं सुरक्षा संबंधी जोखिम अंतर्निहित होते हैं। डिजिटल स्वरूप में होने के कारण आभाषी मुद्राओं को डिजिटल/इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जमा किया जाता है। हैकिंग, पासवर्ड खो जाने, पहुंच संबंधी मानकों के साझा होने, मालवेयर हमलों इत्यादि के कारण इनमें हानि होने का जोखिम होता है। आभासी मुद्राओं के माध्यम से भुगतान पीअर-टु-पीअर आधार पर होते हैं। ग्राहकों की समस्याओं/विवादों/प्रभार वापसी इत्यादि के बारे में उठाए जाने वाले कदमों का कोई स्थापित सुकर ढांचा उपलब्ध नहीं है। आभासी मुद्रा के संबंध में किसी प्रकार की अंतर्निहित आस्ति या सहारा नहीं होता। इनका मूल्य

सट्टेबाजी पर आधारित प्रतीत होती है। इनका कोई विधिक आधार भी बिल्कुल नहीं है। यह तो आभाषी मुद्रा का तथाकथित उद्देश्य है किंतु यह अपनी वृद्धि की स्वभाविक सीमा स्वयं निर्धारित करती है, जिसकी व्याख्या में थोड़ी देर में करूंगा। और अंततः, अनुचित और गैरकानूनी गतिविधियों के लिए आभाषी मुद्रा के प्रयोग के संबंध में रिपोर्टें बहुत अधिक और बेचैन करने वाली हैं।

इन आभाषी मुद्राओं के विरुद्ध मेरी दलील की उत्पत्ति दो प्रमुख सिद्धांतों, नामत: भरोसा और अनामिकता से होती है। किसी 'मुद्रा' में ये दो गुण हमेशा विद्यमान होने चाहिए। इन दोनों में से कोई भी गुण प्रभावित होने से मुद्रा का बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया रुतबा घटेगा। बिटकॉइन पर या कहें कि ब्लॉकचेन अथवा किसी अन्य प्रौद्योगिकी पर आधारित आभाषी मुद्रा पर 'भरोसा' भी उनके प्रारंभिक दौर और क्षेत्रों तक ही सीमित है। प्रारंभिक दौर में हमेशा साहसिक कार्य करने वाले और जोखिम लेने वालों का बोलबाला रहता है। जिस समय बड़ी संख्या में लोग इसमें शामिल होंगे, उस समय जोखिम टालने वालों की संख्या बढ़ेगी। मुद्रा की स्वीकृति के लिए अधिक 'भरोसे' की जरूरत होगी। और ऐसा तभी हो सकता है जब मुद्रा जारी करने का कार्य कोई 'प्राधिकारी' करता है। जहां तक 'अनामता' का सवाल है, ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी के समर्थकों का कहना है कि इसका पता लगाना बहुत मुश्किल बनाया जा सकता है, किंतु इसे अनामता नहीं कहा जा सकता। इसलिए यह एक मिथ्या कल्पना है कि ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी 'आभाषी मुद्रा' का सूत्रपात होने से 'मुद्रा' समाप्त हो जाएगी।

इन नवोन्मेषी पिफनटेक के तरफ़दारों को भी इसका कुछ आभाष है। वे निश्चित रूप से यह देख रहे हैं कि फिनटेक संबंधी नवोन्मेषों की क्षमताओं को बढ़ा-चढ़ाकर बताने से इस क्षेत्र के विकास पर बुरा असर पड़ सकता है। इसकी सहगामी सोच के साथ, बैंकों और वित्तीय संस्थानों को भी यह ज्ञात हो रहा है कि फिनटेक संबंधी नवोन्मेषों को अंगीकार करने या उनके अनुकूल बनना उनके परस्पर और ग्राहक हित में होगा। केंद्रीय बैंक स्वयं आभाषी मुद्रा के लिए ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने की मुहिम चला रहे हैं। बेशक, इसके लिए बहुत अनुसंधान की जरूरत है। मुझे खुशी है कि आईडीआरबीटी ने भारत में बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र के लिए ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के बारे में श्वेत-पत्र जारी किया है। सारे संसार में इस तरह के बहुत से प्रयास किए जा रहे हैं। आशा है कि ये प्रयास प्रयोग-योग्य समाधान के रूप में परिणत होंगे।

मैं अपनी बात समाप्त करते हुए कहना चाहूंगा कि फिनटेक कंपनियां परिवर्तन को तीव्र बना रही हैं और वित्तीय सेवा उद्योग में मौलिक परिवर्तन ला रही हैं। बैंक जैसे वित्तीय सेवा प्रदाता फिनटेक की क्षमताओं को मान्यता प्रदान कर रहे हैं। यह स्पष्ट है कि फिनटेक के बाधाकारी नवोन्मेष पारंपरिक बैंकिंग या वित्त जगत को पूर्णत: समाप्त या पूर्णत: तबाह नहीं कर सकते हैं। तथापि, मैं बहुत से रास्ते देख सकता हूं जिनके जरिए फिनटेक एवं बैंक आपस में सहयोग करके वित्तीय सेवा के ग्राहकों के बेहतरीन सेवाओं का सूत्रपात कर सकते हैं।

मैं आश्वस्त हूं कि यह सम्मेलन अपने साझा लक्ष्यों की प्राप्ति और परस्पर लाभकारी साझेदारी के संबंध में संभावना-युक्त अवसर उत्पन्न करने के लिए सभी हितधारकों को विशिष्ट मंच उपलब्ध कराएगा।